पहला पत्थर कौन मारेगा?

राधेश्याम शर्मा



बच्चोंकी कहानियाँ

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

पहला पत्थर कौन मारेगा?

राधेश्याम शर्मा

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

चित्रकार :
किशोर रणदिवे

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिग
बम्बई–४०० ००२

पहला पत्थर कौन मारेगा ?

ईसा मसीह मानवपुत्र ही नहीं, प्रेम की जीती-जागती मूरत भी थे। मंदिर की मूर्ति अपने आप चलकर कभी भी आंगन से बाहर नहीं जाती, पर प्रेम के अवतार ईसा की बात कुछ और ही थी। वे घूम-घूमकर अपना प्रेम-संदेश घर-घर फैलाते थे। उनके मन में जात-पांत का भेद नहीं था।

ईसा लोगों से कहते, "अंजीर या ऐसे ही किसी वृक्ष के बारे में सोचिए। उस पर कोंपलें फूटते ही हम समझ जाते हैं कि वसंत आनेवाला है। इसी तरह अपने आस-पास कुछ अजीब-सी घटनाएं होने लगें तब समझ लीजिए कि ईश्वरीय राज्य का उदय होने जा रहा है।"

उनके मुंह से निकला हुआ प्रत्येक वचन लोगों के दिल-दिमाग में बैठ जाता था। आकाश के सितारों की तरह उनका हर शब्द अंतर में उजाला भर देता था।

दिन भर गिरजाघर में जाकर लोगों को उपदेश सुनाना और शाम को जैतून पहाड़ पर विश्राम करना, यही था ईसा का नित्यक्रम।

भोर होते ही लोग ईसा की अमृत-वाणी सुनने ऐसे जमा हो जाते थे, मानो गुलाब के बाग में मधुमक्खियों का जमघट हो।

एक दिन ईसा यहूदिया से गालील जा रहे थे। उधर का रास्ता शमरून के सुखार गांव के पास होकर जाता था। गांव के बाहर था याकूब का कुआं।

भरी दोपहर की चिलचिलाती धूप में उस कुएं पर पानी भरनेवाली एक स्त्री को छोड़कर कोई भी नजर नहीं आता था। ईसा के शिष्य खाने-पीने का प्रबन्ध करने गांव में गये थे।

ईसा बहुत थक गये थे और प्यासे भी थे। उन्होंने उस स्त्री से कहा, "बहन, मुझे पानी पिलायेगी?"

"आप तो यहूदी लगते हो। फिर भी मेरे जैसी शमरून औरत से पानी मांग रहे हो?" उस अनजान स्त्री ने उत्तर दिया, 'बड़े आश्चर्य की बात है। यहूदी तो शमरून लोगों के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखते, और एक आप हैं कि—"

ईसा बोले, "काश, तुझे पता होता कि ईश्वर का दान कैसा होता है और आज कौन तुझसे पानी मांग रहा है। अगर तू जानती तो शायद तू स्वयं उससे पवित्र जल मांगती।

"जो जगत के इस कुएं से जल पीता है वह फिर से प्यासा होनेवाला है। जो मेरा दिया पानी पीता है, उसे न केवल पूरी संतुष्टि होती है, बल्कि उसकी प्यास हमेशा के लिए मिट जाती है। मैं ऐसे कुएं और इस पानी की बात नहीं करता, मेरा मतलब हमारे अंतर-तल में फूटनेवाले स्नेह के झरने के जल से है।"

उस स्त्री ने कहा, "तब तो मुझे भी वह जल दीजिए जिससे प्यास भी न लगे और पानी भरने आने की झंझट से भी छुटकारा मिल जाये।"

उस ग्रामीण स्त्री का भोलापन देखकर ईसा के करुणामय चेहरे पर मुस्कान दौड़ गयी। वे बोले, "जा, जाकर तू अपने पति को बुला ला।"

"मेरे पति नहीं हैं।"

"तू ठीक ही कहती है कि तेरे पति नहीं हैं, क्योंकि तू अबतक पांच पति बदल चुकी है। अभी तू जिसके घर में है, वह भी तेरा पति नहीं है। यह सच है न?"

वह स्त्री हैरान रह गयी। बड़ी देर बाद उसके मुंह से धीरे-धीरे ये शब्द निकले, "भगवन, आपको कैसे इन सब बातों का पता चला? मेरे जैसे अज्ञानी लोगों को सही राह दिखाने की कृपा करें।"

ईसा मसीह ने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाया और बोले, "तुम शमरूनी लोग बिना सोचे-समझे पहाड़ों में



"काश तुझे पता होता कि आज कौन तुझसे पानी मांग रहा है ।"

पूजा-साधना करते हो। अगर सच्चे दिल से अपने महान पिता की उपासना कर सको तो तुम्हें जरूर मुक्ति मिलेगी। ईश्वर आत्मा का ही रूप है। इसलिए आत्मा से और सच्चे हृदय से उनकी पूजा करनी चाहिए।"

औरत के दिमाग में मानो रोशनी छा गयी। वह बोली, "सुना है मसीह आनेवाले हैं और वे हम सबको सच्ची राह दिखायेंगे।"

"जिनके बारे में तूने सुना है, वह मैं ही हूं," ईसा ने कहा।

वह भोली नारी कुएं पर अपना घड़ा छोड़कर बेतहाशा गांव की ओर भागी और सब लोगों को कहने लगी, "चलिए, ईसा मसीह आ गये। आइए, आइए मेरे साथ।"

उसकी बातें सुनकर शमरूनी लोग इकट्ठे होने लगे। उन्होंने ईसा को देखा, उनके प्रेम का जादू भी देखा। प्रार्थना करके उन्होंने ईसा को दो दिन ठहरने के लिए राजी किया और उनकी अमृतवाणी सुनते रहे।

ईसा दो दिन उनके बीच रहे, फिर वहां से गालील की तरफ चल दिए।

ईसा जब गालील के काना गांव पहुंचे तब भी एक ऐसी ही असाधारण घटना घटी। किसी सरकारी अधिकारी का इकलौता जवान बेटा मरणासन्न था।

गालील में पैगम्बर पधारे हैं, ऐसा सुनते ही वह अधिकारी भागा-भागा ईसा के चरणों में आया और बोला, "मेरा बेटा अपनी अंतिम सांस ले रहा है। भगवन, उसे फिर से स्वस्थ बना दीजिए।"

ईसा का दिल दया से भर गया। वे बोले, "तुम अपने घर जाकर देखो। तुम्हारा बेटा बिलकुल अच्छा है।"

अधिकारी ने समझा कि ईसा टाल रहे हैं। वह सर झुकाए वापस लौट पड़ा कि सामने से ही उसका नौकर दौड़ता हुआ आया। नौकर ने बताया कि दोपहर एक बजे से छोटे सरकार का बुखार उतर गया है। यही समय था जिस वक्त ईसा ने उस अधिकारी को आशीर्वाद दिया था। इस घटना के बाद वह अधिकारी और उसका पूरा परिवार ईसा का परम भक्त बन गया।

गालील के सामान्य जनों ने तो ईसा को बड़ी श्रद्धापूर्वक स्वीकार किया, पर गिरजाघरों के आचार्यों, धर्म-शास्त्रियों और फरीसियों के मन में उनके

ईश्वरीय रूप को लेकर संदेह बना रहा। आस्थावान समाज तो ईसा में ही ईश्वर का दर्शन करने लगा, पर भला धर्म के ठेकेदारों से यह सब कैसे देखा जाता? वे मन-ही-मन ईर्ष्या की आग में जलने लगे।

वे लोगों से कहते फिरते, "कैसे बुद्धू हो तुम सब! क्या गालील में कभी मसीहा आ सकता है? हमारे शास्त्रों में तो कुछ और ही लिखा है।"

इक्का-दुक्का पुरोहित या फरीशी थे जिन्हें ईसा पर विश्वास था। शेष पंडितों का दावा था कि जो लोग शास्त्रों को नहीं जानते या नहीं पढ़ते, वे सब शाप के भागी हैं। धर्मग्रंथों में जो कुछ लिखा है उसका प्रत्येक अक्षर, चाहे वह कितना ही निकम्मा हो, आंख मूंदकर मानना चाहिए।

ईसा के जमाने में किसी पुरुष का परायी स्त्री के संग या स्त्री का अन्य पुरुष के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखना घोर पाप था। पकड़े जाने पर दोषी व्यक्ति को दुराचारी या व्यभिचारी मानकर उसके ऊपर पत्थर बरसाये जाते थे और पत्थरों से ही उसकी हत्या कर दी जाती थी।

अनाचार पाप ही सही, लेकिन अनाचारी व्यक्ति को भी अपनी बात कहने का या अपने में सुधार करने का अवसर न देकर, उसे पत्थरों से मार डालना पाप से भी भयंकर है। मगर यह बात कौन किसे समझाए? आदमी की मौत तब मनोरंजन का सामान बन गयी थी।

एक दिन की बात है। ईसा अपने नियमानुसार जैतून पर्वत पर गये।

सूरज ढल चुका था। चांद के उदय होने से पहले, रात्रि का अंधकार गालील की गलियों पर धीरे-धीरे उतरने लगा था मानो कोई अजगर पूरे नगर को निगलने जा रहा हो।

आधी रात हो चुकी थी।

कुत्तों का भौंकना कुछ शांत हुआ। एक मकान का दरवाजा आहिस्ते से खुला। मकान में रहनेवाली जवान औरत काला कंबल ओढ़े बाहर रास्ते पर आयी। गली का अंधकार दबे पांव पार करती वह अपने प्रेमी से मिलने निकल पड़ी।

अनजाने में उसका पैर रास्ते पर सोए एक काले कुत्ते की दुम पर पड़ा। कुत्ता तिलमिलाकर उठा और दोनों पैरों पर खड़ा होकर जोर-जोर से भौंकने लगा।



स्त्री घबराहट में उल्टी दिशा में दौड़ने लगी। कुत्ते ने उसके लहंगे का छोर मजबूती से जकड़ लिया।

लहंगे के कट जाने की परवाह न करके औरत दौड़ने लगी। कुत्ता क्या था, साक्षात् यमदूत था। वह दौड़ता हुआ लगातार भौंकता जा रहा था। औरत उसे दूर भगाने की जितनी कोशिश करती, वह उतना ही चिल्ला-चिल्लाकर दौड़ता।

इतना शोर-गुल सुनकर लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल आये। उस घबरायी हुई औरत के चारों तरफ लोग जमा हो गये। अब चकमा देकर भागना संभव न था।

लोग पूछताछ करने लगे, "कौन है तू? कौन है तेरा पति? इतनी रात में अपने घर में बीमार पति को छोड़कर, ऐसा मैला दुशाला ओढ़े तू किधर जा रही थी? और वह भी बिलकुल अकेली?"

इसी बीच आ धमके पंडित-पुरोहितों के दल। उन्होंने शास्त्रवचन सुनाते हुए बताया कि यह औरत व्यभिचार के लिए जा रही थी। इससे पूछने की क्या जरूरत? पूछने पर तो वह हजार बहाने बनाना शुरू कर देगी।

एक पंडित ने कहा, "इसने जो अपराध किया है उसकी सजा एक ही हो सकती है। हमारे कानून के अनुसार इस कुलटा स्त्री को पत्थर मारकर खत्म कर देना चाहिए। मैं मानता हूं कि आप सब भी इस फैसले से सहमत हैं। पति जब सो रहा हो तब उसे छोड़कर, दूसरे पुरुष के पास जानेवाली स्त्री वेश्या से भी बदतर है।"

भीड़ बेकाबू होती जा रही थी। लोगों का दुर्व्यवहार बढ़ता ही जाता था। स्त्री की हालत बुरी थी। किसी ने उसके बाल खींचे, किसी ने कपड़े और कोई उसके ऊपर गालियों की बौछार कर रहा था। स्त्री को लेकर भीड़ गिरजाघर की ओर बढ़ रही थी।

इधर गिरजाघर के विशाल आंगन में अपार जन-समूह उमड़ पड़ा था। जैतून पर्वत से ईसा वापस आ पहुंचे थे। सब उनका उपदेश सुनने आये थे।

सूर्यमुखी के फूल की तरह खिले ईसा को देखकर शांति छा गयी।

गिरजाघर में एकत्रित अपने भक्तजनों को संबोधित करते हुए ईसा ने धीर-गंभीर आवाज में कहा, "मेरे प्यारे भाइयो, आप से मेरी बिनती है कि अपने दुश्मनों पर प्रेम बरसाते रहना। जो व्यक्ति आपसे ईर्ष्या करता हो, उसकी भलाई के लिए दुआ करना। कोई शाप दे तो उसे आशीर्वाद देना। कोई आपका कोट मांगता हो तो उसे अपनी कमीज भी दे देना। जो आपसे कुछ मांगे उसे वह जरूर देना। किसी ने आपका कुछ लूट लिया हो तो उसे वापस मत मांगना।

"लोगों से ऐसा ही व्यवहार कीजिए जैसा व्यवहार आप खुद दूसरों से चाहते हैं।

"जो तुम्हें प्रेम करता हो उसी से तुम भी प्रेम करते हो, तो इसमें कौन सी बड़ी बात है? ऐसा तो पापी भी करते हैं। वे भी उसी को अपना प्रेम देते हैं, जिससे उन्हें प्रेम मिलता है। जो आपका भला करता है, उसी

का भला करने में क्या विशेषता है ? आपमें और किसी पापी व्यक्ति में फर्क क्या है तब ?"

ईसा यह कह ही रहे थे कि गांव की तरफ से कुछ लोग शोर करते आते दीखे । ईसा की बातें सुनने आये लोगों ने उधर देखा । सुबह-सुबह जाने क्या हंगामा हो गया। लगता है भीड़ इधर ही आ रही है ।

भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे मुफ-लिस जैसे कुछ लोग और पंडे-पुरोहितों का घमंडी दल। बीच में थी वही बदनसीब स्त्री । उसने अपना मुंह आंचल में छिपा लिया था। उसके कपड़े बुरी तरह फट गये थे। उसी फटेहाल दशा में लाया जा रहा था उसे। शरारती बच्चे उसे कंकड़ मार रहे थे। उसे इतनी बुरी तरह पीटा गया था कि एक कदम चलना भी उसके लिए किसी पहाड़ पर चढ़ने जैसा कष्टदायक हो रहा था ।

कौन क्या कर रहा है, कुछ पता न चलता था। किसी-किसी के मुंह से तो गाली भी सुनायी देती थी।

भीड़ आ पहुंची गिरजाघर में। ईसा ने भी नजर उठाकर देखा इन तमाशबीनों को।

ईसा-भक्तों को संबोधित करते हुए एक पुरोहित ने चिल्लाकर कहा, "हट जाओ। हमें आगे जाने का रास्ता दो । हमें ईसा के पास इस कुलटा के लिए न्याय मांगना है।"

"हां, हां, क्यों नहीं । इंसाफ तो होना ही चाहिए। भाइयो, पंडितों को और इस औरत को ईश्वर के पैगम्बर तक जाने के लिए रास्ता दीजिए," कई लोगों ने चिल्लाकर कहा।

स्त्री को घसीटते हुए कुछ लोग ईसा की ओर बढ़े ।

एक शास्त्री ने दूसरे के कानों में कहा, "आज ईसा की कसौटी है। धर्मशास्त्रों में तो वह मानता नहीं । आज इस मामले का न्याय करने में कहीं खुद ही न फंस जाये। देखते रहना ।"

अपने को अतिज्ञानी कहनेवाले एक पुरोहित ने स्त्री की ओर उंगली उठाते हुए कहा, "आप ही बताइए गुरुदेव ! इस भोली-भाली-सी स्त्री को आप देख रहे हैं न ? इसे अन्य पुरुष के साथ दुराचार करते हुए हमने रंगे हाथों पकड़ा है।"

दूसरे ने कहा, "यह औरत वेश्या

हीं तो और क्या है ? बताइए, इसे या सजा दी जाये ?"

तीसरा पंडित देखने में गंभीर-सा ा। उसने भी अपना रटा हुआ शास्त्र-चन दुहराते हुए कहा, "मूसा की ास्त्राज्ञा है कि ऐसी स्त्री को उसके ुकर्मों की सजा मिलनी ही चाहिए। ह सजा है इसे पत्थरों से मारकर ौत के घाट उतार देना। बताइए, ापकी क्या राय है?"

एक आदमी आगे आया और बोला, "भगवन, सब लोगों ने कानून अपने हाथ में ले लिया था। इनका वश चलता तो अबतक इस स्त्री को खत्म ही कर डालते। मैंने ऐसा करने से इन लोगों को रोका।

"मैंने कहा कि जबतक न्याय नहीं होता, दोषी को दंड देना उचित नहीं है। इसे ले चलें हम ईसा के पास और उन्हें ही न्याय करने दें।

"अब हम आये हैं आपके पास। आप ही बताएं कि हम इसे क्या सजा



दें । इन पंडितों ने तो शास्त्रों के नाम पर बता ही दिया है कि दुराचारी स्त्री को पत्थर बरसा कर मार डालना चाहिए । आपकी राय क्या है भगवन ?"

किसी ने चिल्लाकर कहा, "शास्त्र ने जो बताया है, वह ठीक है ।"

कई लोगों ने एक साथ भीड़ को शांत किया और बोले, "अब हम ही बोलते रहेंगे या ईसा को भी कुछ बोलने देंगे !"

सभा में उपस्थित लोगों ने एक स्वर में कहा, "बंद करो सब बकवास । ईसा का संदेश सुनने दो ।"

सारे कोलाहल के दौरान ईसा अत्यंत शांत चित्त से नीचे झुककर अपनी लम्बी उंगलियों से जमीन पर कुछ रेखाएं खींचने में लगे थें ।

सभा में सन्नाटा छा गया ।

ईसा नें ऊपर आकाश की ओर देखा, फिर बड़ी गंभीर आवाज में सिर्फ इतना बोले, "सज्जनगण, मैं कौन होता हूं सारे संसार का इंसाफ करनेवाला ? इंसाफ कर चुकने के बाद ही तो आप सब लोग इधर आये हो ।"

ईसा की बात सुनकर लोग शोर-गुल मचाने लगे । कुछ शरारती लड़कों



ने मुंह से सीटियां भी बजायीं। इंसाफ के ठेकेदार एक बार फिर खड़े हुए। लोगों के सामने दोनों हाथ जोड़कर लोगों से शांति बनाये रखने की प्रार्थना करने लगे।

हंगामा कुछ शान्त हुआ तो एक आदमी ईसा के पास पहुंचा और उनसे कहने लगा, "भगवन, ऐसे नहीं चलेगा। इसका न्याय करना ही होगा और वह भी आप ही करेंगे। आप जैसें व्यक्ति गुनाहों की उपेक्षा करने लगेंगे तो फिर पृथ्वी पर आदमी रहेगा कैसे? रोज सवेरे ईश्वर के आंगन में आप सारे जगत को ज्ञानबोध देते हैं। फिर ऐसी बदचलन औरत को न्याय नहीं दिला सकते क्या?"

ईसा ने उस आदमी को रोकते हुए कहा, "एक स्त्री के लिए ऐसे अपशब्द नहीं बोलते। स्त्री जाति तो साक्षात ईश्वर का रूप है। सारे संसार की जनक है स्त्री। उसी की पवित्र कोख से पृथ्वी ने जन्म लिया है। उसे गाली देना तो अपनी मां पर लागू होता है।

"किसी भी स्त्री की निन्दा करना सबके लिए घोर पाप है। दूसरे पापों का प्रायश्चित्त संभव है पर इसका—" कहते-कहते वे रो पड़े। इशारे से अपनी बात उन्होंने पूरी कर दी।

औरत को यहां तक लानेवाले धार्मिक लोगों की समझ में कुछ न आया।

वे बोलने लगे, "हम इन बातों को नहीं समझते। आप ईसा हो। हमारे गुरु हो। आप निष्कपट और सरल हृदय के आदमी हो।

"आप इस बदजात औरत को नहीं जानते। कई घाटों का पानी पी चुकी है यह। हमने अपनी आंखों के सामने इसे पकड़ा है। रंगे हाथों पकड़ी गयी है। अब फैसला आप करें। इसे पत्थर मार-मारकर खत्म करें या इससे भी कोई कड़ी सजा इसके लिए होगी?"

ईसा अब और सह न सके। बोले, "मेरे भाइयो, इस संसार में सभी पशु और मनुष्य को भगवान ने कच्ची मिट्टी से बनाकर भेजा है। मैं भी तो इसी कच्ची मिट्टी का बना हूं। तुम सब भी ऐसे हीं बने हो। और ये दोषी औरत भी कच्ची मिट्टी से हीं बनी है। बताइए, ऐसी स्थिति में कौन किसका न्याय करेगा?

"कच्ची मिट्टी का एक पुतला क्या कच्ची मिट्टी से ही बने दूसरे पुतले का इंसाफ कर सकता है?

"हम सब कच्ची मिट्टी से बने हैं। इस औरत को हम असली न्याय कैसे दे सकते हैं?

"असली न्याय अपनी मर्यादा बनाये रखने में ही है। दूसरों का न्याय करने बैठने की क्या जरूरत? दूसरों को बेआबरू करने में, दूसरों की टोपी उछालने में हम कितना मजा लेते हैं! इसका न्याय अभी तक क्यों नहीं हुआ? खुद भगवान ने भी ऐसा करने में ही गनीमत समझी है। यदि ऐसा न होता तो इस दुनिया का कब का विनाश हो गया होता।"

करुणामूर्ति ईसा अपने दाहिने पांव से जमीन कुरेदते हुए बोल रहे थे।

लोग कुछ सहम गये। फिर भी कुछ लोग, जो अपने-आपको कुछ ज्यादा ही चतुर मानते थे, डटे रहे, "नहीं गुरुजी, इसका समाधान तो करना ही होगा। आप बताइए कि इसे पत्थरों से मार दिया जाए या नहीं?"

ईसा का संपूर्ण व्यक्तित्व जैसे लज्जा से सिकुड़ गया। उनके चेहरे पर पसीना आ गया, गला भर आया।

एक पण्डितजी ने कहा, "बताइए न भगवन, पत्थर मारें या नहीं?"

ईसा के दिल में गहरी टीस उठी।

दूसरे पंडित ने कहा, "बताइए, चुप न रहिए।"

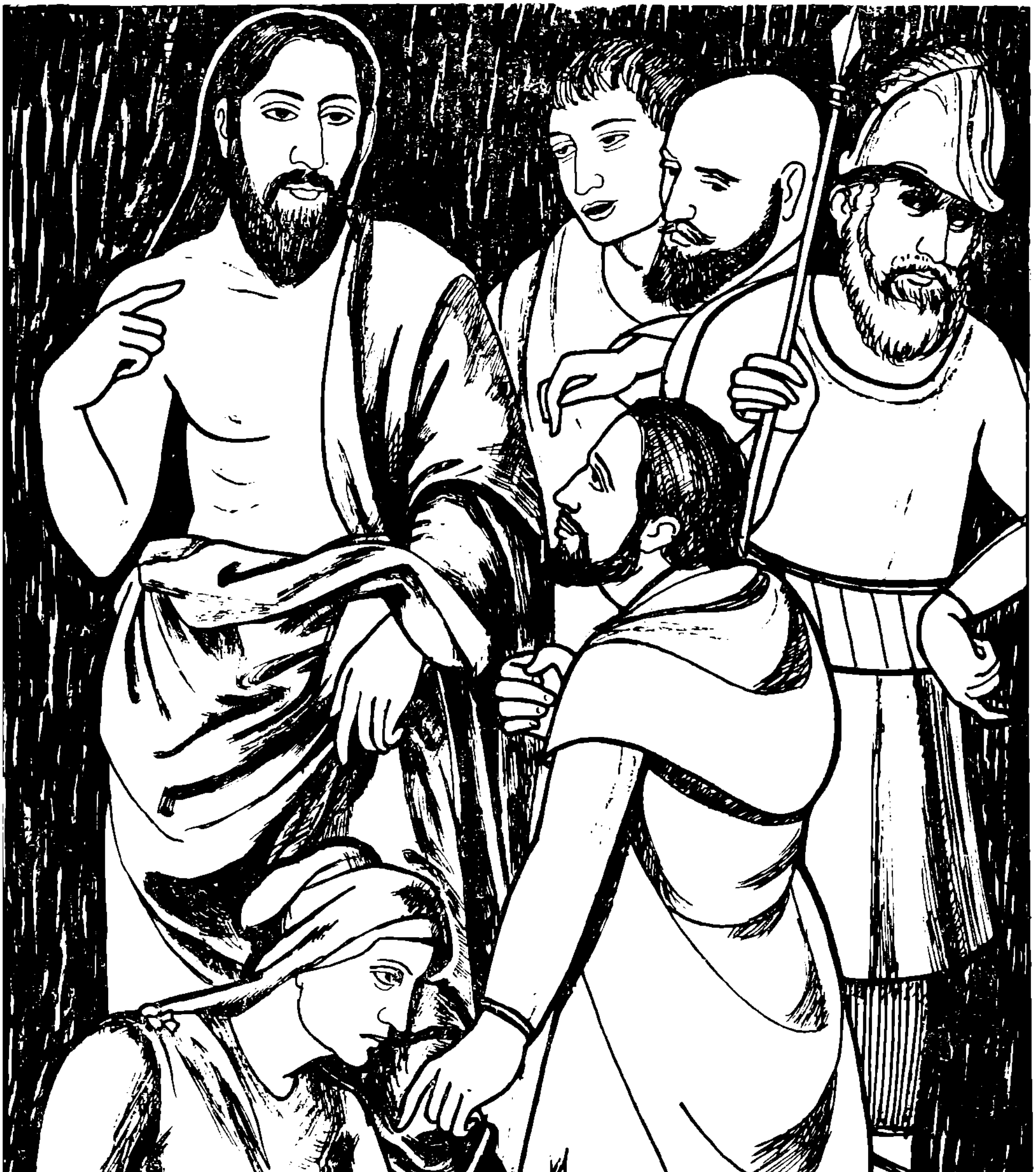
तीसरा बोला, "चुप क्यों हैं आप?"

भीतर की पीड़ा बढ़ती जा रही थी। किसी प्रकार वे बोले, "अच्छा भाइयो, आप सब इंसाफ चाहते हैं न?"

भीड़ ने स्वीकार में शोर किया।

ईसा ने भेदती नजर से सबकी आंखों में देखा, और फिर दृढ़ स्वर में बोले, "आप सब अपनी आत्मा से पूछ लें। जिसने अपनी जिंदगी में कभी मन में भी पाप का विचार न लाया हो, वही व्यक्ति इस औरत को पहला पत्थर मार सकता है। पत्थर फेंकने का अधिकार ऐसे पुण्यशाली को ही प्राप्त है, दूसरे किसी को नहीं।"

ईसा की बात जैसे खौलते दूध में पानी की तरह पड़ी। लोग चकित रह गये। सबकी धड़कनें ही जैसे रुक गयीं। एक तिनका भी गिरे तो शोर सुनायी दे, ऐसा सन्नाटा छा गया।



"जिसने कभी मनमें भी पाप का विचार न लाया हो,
वही इस औरत को पहला पत्थर मार सकता है।"

सबने सर झुका लिया। उन्मादित भीड़ दुबक गयी।

ईसा तो अपना फैसला सुनाकर, जमीन पर उंगली से कुछ रेखाएं खींचते रहे, मानो किसी का भविष्य बना रहे हों। वे मन-ही-मन सोचने लगे कि इतना सारा कोलाहल अचानक क्या पाताल में समा गया?

सिर उठाकर देखा तो मंदिर के प्रांगण में बच गये थे केवल दो – वे स्वयं और वह बदनसीब स्त्री!

गालील की सड़कें सुनसान हो गयी थीं।

ईसा खड़े हुए। हवा के झोकों से उनके बाल लहरा रहे थे।

स्त्री की आंखों से आंसू बह रहे थे।

ईसा ने उसका संकोच दूर करने के लिए कहा, "कहां चले गये सब हमारे भाई? पत्थर मारने के लिए एक भी नहीं ठहरा?"

स्त्री चुपचाप उन्हें देखती रही।

"मैं भी तुम्हें ऐसी सजा देना नहीं चाहता था मां। तुम निश्चित होकर अपने घर जा सकती हो। आइंदा अपने आपको पाप से बचाकर रखना, क्योंकि पाप का जितना बोझ पृथ्वी पर बढ़ता है, वह संतों और ईश्वर के भक्तों को ढोना पड़ता है।

"उस बोझ को मत बढ़ाना, इतनी ही प्रार्थना है।"

स्त्री की आंखें धरती में ही गड़ी थीं। जिसने उसे एक बार भी पापी नहीं कहा, उसने ही उसे उसकी गलतियों का एहसास करा दिया था।

वह ईसा के चरणों में झुक गयी।

ईसा ने हंसकर उसे आशीर्वाद दिया। ऐसा लगा मानो सूर्य की किरणें दूने प्रकाश के साथ पृथ्वी पर बरस पड़ी हों।

●

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

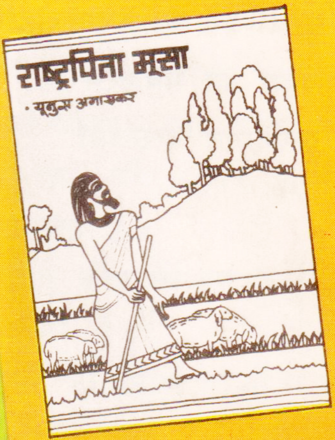
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

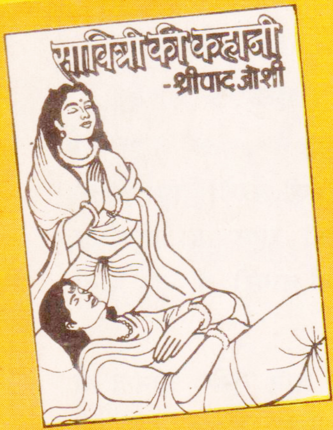
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है। हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां











एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५